प्रातःक्लास ओमशांति 30.9.67

रिकार्ड–मुखड़ा देख ले.....ओमशांति। रुहानी पार्टधारी बच्चों प्रति बाप समझाते हैं ;क्योंकि ....बजाय रही है बेहद की नाटक में। है तो मनुष्यों का ना। तो बच्चे इस समय पुरुषार्थ कर रहे है मुक्ति–जीवनमुक्ति के लिए। यह दो अक्षर राइट है। सभी ....जीवनमुक्ति के लिए पुरुषार्थ कर रहे हैं। भल वेद–शास्त्र पढ़ते हैं, शिव की पूजा करते हैं ;परंतु बाप कहते हैं इनसे मेरे को प्राप्त नहीं होते ; क्योंकि भक्ति है ही दुर्गति मार्ग। ज्ञान से सदगति होती है तो जरूर कोई से दुर्गति होगी। भक्ति से है दुर्गति। यह एक खेल है जिसको कोई भी नहीं जानते। शिवलिंग को जब पूजते हैं तो उनको ब्रह्म नहीं कहेंगे। तब कौन है जिसको पूजते हैं। उनको भी ईश्वर समझकर पूजा करते हैं। बाप कहते हैं इन सन्यासियों आदि को महात्मा कह नहीं सकते हैं। यह उन्हों का अज्ञान है। दुर्गति का अभिमान है। ज्ञान का अभिमान है नहीं। वास्तव में अभिमान एक ही शुद्ध होना चाहिए बाप को याद करने की। यह थोड़े ही जानते हैं जिसकी हम पूजा करते हैं वह क्या है। कहते हैं नाम–रूप से न्यारा है। फिर यह तो नाम–रूप हो गया ना। हीरे की चाहे ,पत्थर की बनाते हैं। तुम जब पहले2 भक्ति शुरू करते हो हीरे का बनाते हो। अभी तुम गरीब बन गए हो। फिर पत्थर की बनाते हैं। हीरे का लिंग उस समय 40/50 रुपये का होगा। इस समय तो उनका दाम 5/7लाख होगा। ऐसे हीरे अभी मुश्किल निकलते हैं। पत्थरबुद्धि बन गए हैं तो पूजा भी पत्थर की करते हैं ज्ञान बिगर। जब ज्ञान है तो तुम पूजा नहीं करते हो। चैतन्य में है उनका ही तुम याद करते हो। जानते हो याद से विकर्म विनाश होंगे। गीत भी कहते हैं हे बच्चों,प्राणी कहा जाता है आत्मा को। प्राण निकल गया फिर तो जैसा मुरदा है। आत्मा निकल जाती है। आत्मा है अविनाशी। बाकी शरीर है विनाशी। आत्मा जब शरीर में प्रवेश करती है तब चैतन्य है। बाप कहते हैं हे आत्माएं अपने अंदर जांच करो कहां तक दैवी गुणों की धारणा हुई है। कोई विकार तो नहीं है। चोरी–चकारी ,कोई आसुरी गुण तो नहीं है। आसुरी कर्तव्य करने से फिर गिर पड़ेंगे। इतना दर्जा नहीं पाय सकेंगे। खराब आदत को मिटाना जरूर है। देवताएं कब कोई पर गुस्सा नहीं करते। वहां शेर–बकरी भी कब गुस्सा नहीं करते। नहीं तो शेर को गुस्सा आता है तो एकदम चम्बा लगाय खाय लेते हैं। यहां असुरों द्वारा कितने मार खाते हैं ;क्योंकि तुम दैवी सम्प्रदाय बनते हो। तो माया कितनी दुश्मन बन जाती है। माया के अवगुण काम करते हैं। मारना, तंग करना,बुरा काम करना। तुम बच्चों को तो बहुत शुद्ध होना चाहिए। चोरी–चकारी आदि करना यह तो महान पाप है। बाप से तुम प्रतिज्ञा करते आये हो बाबा मेरा तो आप एक दूसरा न कोई। हम आपको ही याद करेंगे। भक्तिमार्ग में मिल गाते हैं ;परंतु उनको यह पता नहीं है कि याद से क्या होता है। वह तो बाप को जानते ही नहीं। एक तरफ कहते नाम–रूप से न्यारा है,दूसरे तरफ लिंग की पूजा करते है।। कलियुग भ्रष्टाचारी दुनियां में महान आत्मा कोई हो न सके। सब भ्रष्टाचारी ही कहेंगे। देवताएं हैं श्रेष्ठाचारी। तुम महान आत्मा श्रेष्ठाचारी को कहेंगे या भ्रष्टाचारी को?बाप समझाते हैं रावण राज्य में एक भी श्रेष्ठाचारी हो नहीं सकता। यह लोग तो अपने को ही श्री,श्री 16108जगदगुरू कह देते हैं। जैसे बाप तुम बच्चों को अपने से भी उंच बनाते हैं, वैसे यह फिर बाप से भी उंच अपने उपर टाइटिल रख देते हैं। बाप तो कहते हैं अर्थ सहित तुमको उंच बनाता हूं। यह महात्मा लोग अपन को बाप से भी उंच कह देते। तुमको अब कितना ज्ञान मिलता है। तुम्हारे आगे तो वह जैसे उल्लू लोग हैं। कुछ भी समझते नहीं। महात्मा कृष्ण को भी कहते हैं। कहां वो विश्व का मालिक, कहां यह कलियुग में भ्रष्टाचार से पैदा हुए। इन्हों को निर्विकारी कह नहीं सकेंगे। ऐसे मत समझो विकार में नहीं जाते तो निर्विकारी कहेंगे। नहीं। पैदा तो फिर भी भ्रष्टाचार से होते हैं ना। वहां भ्रष्टाचार की बात नहीं। रावणराज्य है नहीं। रामराज्य सतयुग को,रावणराज्य.....को कहा जाता है। यहां सतयुग थोड़े ही है ,जो मनुष्य पावन हो। वह लोग तो .....टोपी रख देते हैं। तुमको अच्छी रीति समझकर फिर समझाना है। बाप कहते हैं जज करो .....

.....श्रीकृष्ण जो छोटा बच्चा स्वर्ग का प्रिंस है वह महात्मा है या यह कलियुगी गुरू लोग?वह विकार से पैदा नहीं होता है ना। वह है ही निर्विकारी दुनियां। निर्विकारी को बहुत टाइटिल दे सकते हैं। विकारी का क्या टाइटिल है?तुम्हारा एक गीत भी है मेहतर उनसे बेहतर जो खाते मेहनत का खाना। वह लोग भी मुफ्त में खाते हैं। बाप से बेमुख कर देते। पैसे कितने हैं उन्हों के पास। गवर्मेंट भी उन्हों को पकड़ सकती है। तुम तो कहते हो हमने घर–बार छोड़ा है। फिर इतना धन क्यों रखते हो?आगे तो यह भिक्षा लेते थे। पैसा कब नहीं लेते थे। अभी तो कितने पैसे लेते हैं। बहुत साहुकार हैं। फिर गवर्मेंट को भी मदद करते हैं। दान में देते हैं। यह सभी हैं भ्रष्टाचारी। श्रेष्ठाचारी तो एक ही बाप बनाते हैं। वह है सबसे उंच ते उंच। और सभी मनुष्य पार्टधारी हैं। तो पार्ट में जरूर आना पड़े। सतयुग है श्रेष्ठ मनुष्यों की दुनियां जनावर आदि सब श्रेष्ठ हैं। वहां माया रावण ही नहीं। वहां ऐसे कोई तमोगुणी जनावर होते नहीं। तुमको मालूम है मोर डेल है। वह विकार से बच्चा पैदा नहीं करती। उनका आंसू पीता है तो उनको डेल धारण करती है। नेशनल बर्ड कहते हैं। सतयुग में भी विकार का नाम नहीं। मोर का पंख, पहला नम्बर जो प्रिंस है श्रीकृष्ण उनके सिर में लगाते हैं। कोई तो रहस्य होगा ना। तो यह सब बातें बाप रिफाइन कर समझाते हैं। वहां बच्चे कैसे पैदा होते हैं वह भी तुम जानते हो। प्यार से भी हो सकता है। वहां भी भ्रष्टाचारी बिल्कुल होती नहीं। बाप कहते हैं तुमको देवता बनाते हैं तो अपनी जांच पूरी करो। मेहनत बिगर विश्व का मालिक थोड़े ही बन सकेंगे। जैसे तुम्हारी आत्मा बिंदी है। इसमें मूंझने की कोई दरकार नहीं। कोई कहते हैं हम देखें किसको। बाप कहते हैं देखने वालों की तो तुमने बहुत पूजा की। फायदा कुछ भी नहीं हुआ। अब यथार्थ रीति मैं तुमको समझाता हूं। मरे में सारा पार्ट भरा हुआ है। सुप्रीम सोल है ना। सुप्रीम फादर। कोई भी बच्चा अपने लौकिक फादर को ऐसे नहीं कहेंगे। एक को ही कहा जाता है। सन्यासियों के तो बच्चे हैं नहीं जो बाप कहें। यह तो सभी आत्माओं का बाप है, जो वर्सा देते हैं। उन्हों का कोई गृहस्थ आश्रम तो ठहरा नहीं। बाप बैठ समझाते हैं तुमने ही 84जन्म भोगे हैं। पहले2 तुम सतोप्रधान सुप्रीम देवी–देवता थे। फिर नीचे उतरते आये हो। अभी तो अपन को सुप्रीम थोड़े ही कहेंगे। अभी तो नीच समझते हैं। कहते हैं निभाना समझो। सर उंचा न करो। यह स्वामी भक्त ऐसे2 सुनाते हैं। बाप बार2 समझाते हैं मूल बात कि अपने अंदर देखो हमसे कोई विकार तो नहीं होता। रात को जरूर पोतामेल निकालो। व्यापारी हो पोतामेल निकालते हैं ना। गवर्मेंट सर्वेंट किसका पोतामेल निकालेंगे?कुछ भी नहीं। इस ज्ञान मार्ग में भी व्यापारी तीखे जाते हैं। पढ़े–लिखे ऑफिसर इतना नहीं। व्यापार में तो आज 50कमाया ,कल 60कमावेंगे। कब घाटा भी हो जावेगा। गवर्मेंट सर्वेंट की फिक्स होती है। इस कमाई में भी अगर देही अभिमानी न होंगे तो घाटा पड़ जावेगा। नौकरी वाले इतना ज्ञान भी नहीं उठाय सकते। मातायें तो व्यापार करती नहीं। उनके लिए और ही सहज है। कन्याओं के लिए और भी सहज है ;क्योंकि माताओं को तो सीढ़ी उतरनी पड़ती है। बलिहारी जो इतनी मेहनत करते हैं। कन्यायें तो विकार में गई ही नहीं तो छोड़ें फिर क्या? पुरुषों को भी मेहनत लगती है। कुटुम्ब परिवार की सम्भाल करनी पड़ती है। सीढ़ी जो चढ़े हैं सारी उतरनी पड़ती है। घड़ी2 माया थप्पड़ मार गिराय देती है। अभी तुम ब्रह्माकुमारी बनी हो। कुमारियां पवित्र ही होती हैं। सबसे जास्ती होता है पति का प्रेम। अब उनसे बुद्धि का योग और पतियों का पति जो एक है उनको याद करना है। और सब भूलना है।.....को बच्चों में मोह होता है। बच्चे तो हैं ही.....। .....के बाद मोह शुरू होता है। पहले स्त्री प्यारी लगेगी। फिर विकारों में ढकेलने की सीढ़ी चढ़ना शुरू कर.....। कुमारी निर्विकारी है तो पूज्य मानी जाती है। तुम्हारा नाम है ब्रह्माकुमारियां। तुम महिमा लायक बन .....बनती हो। बाप ही तुम्हारा टीचर भी है। तो तुम बच्चों को नशा रहना चाहिए। .....भगवान जरूर भगवान–भगवती ही बनावेंगे। सिर्फ समझाया जाता है भगवान एक है।

बाकी सब हैं भाई2। दूसरा कोई कनेक्शन नहीं। प्रजापिता ब्रह्मा से रचना होती है। शरीरधारी... .....फिर वृद्धि होती है। आत्माओं की (मल्टीप्लिकेशन) नहीं कहेंगे। वृद्धि मनुष्यों की होती है। आत्माओं का तो .....नम्बर है। अभी तक आते रहते हैं। जब तक यहां हैं आते रहेंगे। झाड़ बढ़ता जायेगा। ऐसे नहीं कि सूख जावेगा। इनका बनियन ट्री से भेंट किया जाता है। फाउंडेशन है नहीं। बाकी सारा झाड़ खड़ा है। तुम्हारा भी ऐसे है। फाउंडेशन है नहीं। कुछ न कुछ निशानी है। अभी तक भी मंदिर बनाते रहते हैं। मनुष्यों को यह थोड़े ही पता है कि देवताओं का राज्य कब था, फिर कहां गया। नेति2 करते रहते हैं। यह नालेज तुम ब्राह्मणों को ही है। शंकराचार्य से तुम पूछो आप यह जिसकी पूजा करते हो यह लिंग कितना बड़ा है। कब जवाब नहीं देंगे। उन्हों को थोड़े ही मालूम है कि परमात्मा बिंदी हैं। गीता में लिख दिया है अखंड ज्योति स्वरूप है। आगे बहुत को सा. होते थे भावनानुसार। बहुत लाल हो जाते थे। बस, हम नहीं सहन कर सकते हैं। अब वह तो सा. था। बाप कहते हैं सा. से कोई कल्याण नहीं। यह तो मुख्य है याद की यात्रा। जैसे पारा खिसक जाता है ना। यह भी घड़ी2 खिसक जाते हैं। कितना चाहते हैं बाप को याद करें, फिर और खयाल आ जाते हैं। इसमें ही तुम्हारी युद्ध है। ऐसे नहीं कि फट से पाप मिट जावेंगे। नहीं। समय लगता है। कर्मातीत अवस्था हो जाए तो फिर यह शरीर न रहे। फिर नया शरीर चाहिए। जब तक नया शरीर न मिले तो सूक्ष्मवतन में ठहर जाते हैं ;परंतु कर्मातीत अवस्था नहीं पाय सकते। फिर उनको सतयुगी शरीर चाहिए। तो अब तुम बच्चों को बाप को याद करना है। अपन को देखते रहो। हमसे कोई बुरा काम तो नहीं होता। पोतामेल जरूर रखना है। व्यापारी जल्द साहुकार बन सकते हैं। वह साहुकार तब बनते जब गवर्मेंट ठगते हैं। बहुत पकड़ते भी हैं। विलायत में तो बहुतों के पैसे हैं। समझते हैं वहां सेफ्टी है। राजाओं के तो बहुत पैसा विलायत में रहते हैं। कोई तो आफत आदि देखते हैं तो चले जाते हैं विलायत। फिर बहुत टाइम लग जाता है। इन्क्वायरी आदि में दूसरे बादशाही में चले जाते हैं तो बाप के पास जो भी नालेज है वह दे रहे हैं। बाप कहते हैं मेरी आत्मा में यह ज्ञान नूंधा हुआ है। हूबहू वह ही जो कल्प पहले ज्ञान दिया था। बच्चों को ही समझावेंगे और क्या जानें?तुम इस सृष्टि चक्र को जानते हो। उसेमं सब एक्टर्स का पार्ट नूंधा हुआ है। बदल–सदल नहीं होता। न कोई छुटकारा ही पाय सकते हो। हां, बाकी बहुत समय मुक्ति मिलती है। तुम तो आलराउंडर हो। 84जन्म लेते हो। बाकी सब अपने घर होंगे। फिर पिछाड़ी में मच्छरों सदृश आवेंगे। मोक्ष चाहने वाले यहां आवेंगे नहीं। वह फिर बिल्कुल पिछाड़ी में चले जावेंगे। ज्ञान कब सुनेंगे नहीं। मच्छरों सदृश आये और गये। तुम तो ड्रामा अनुसार पढ़ते हो। जानते हो बाबा ने 5000वर्ष पहले भी ऐसे राजयोग सिखाया था। तुम फिर औरों को समझाते हो कि शिवबाबा ऐसे कहते हैं। अभी तुम जानते हो हम कितने उंच थे। अब कितने नीच बने है। फिर बाप उंच बनाते हैं। तो ऐसा पुरुषार्थ करना चाहिए नां यहां तुम आये हो रिफ्रेश होने। इसका नाम ही पड़ा है मधुबन। तुम्हारी कलकत्ता वा बम्बई में थोड़े ही मुरली चलती है। मधुबन में ही मुरली बाजे। मुरली सुनने के लिए बाप के पास आना होगा रिफ्रेश होने। नई2 प्वाइंट्स निकलती रहती हैं। सम्मुख सुनने में तुम फील करते हो। फर्क बहुत रहता है। आगे चल बहुत पार्ट देखेंगे। बाबा पहले सब सुनाय दे तो सब टेस्ट निकल जाये। आस्ते2 इमर्ज होता जाता है। एक सेकेंड न मिले दूसरे से। बाप आये हैं रुहानी सेवा करने। तो बच्चों का भी फर्ज है रुहानी सेवा करना। कम से कम तो यह भी बताओ बाप को याद करो तो पवित्र बनो। पवित्रता में ही फेल होते हैं। तुम बच्चों को बहुत खुशी होनी चाहिए। ....के सम्मुख बैठे हैं। जिसको कोई भी नहीं जानते। ज्ञान सागर वह शिवबाबा ही है। ....योग निकाल देना चाहिए। शिवबाबा का यह रथ है। यहां रिगार्ड न रखेंगे तो धर्मराज द्वारा.... .....खानी पड़ेगी। बड़ों का रिगार्ड तो रखना है ना। आदि देव का कितना रिगार्ड रखते..... इतना रिगार्ड है तो चैतन्य का कितना रखना है। बड़ों का भी रिगार्ड न रखते तो.....कहेंगे। कई तो कहते हैं हमको तो शिवबाबा से मिलता है। उनको ही हम .....